पटसन ज्योति

सितंबर 2021

छठा अंक

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

The Jute Corporation of India Limited

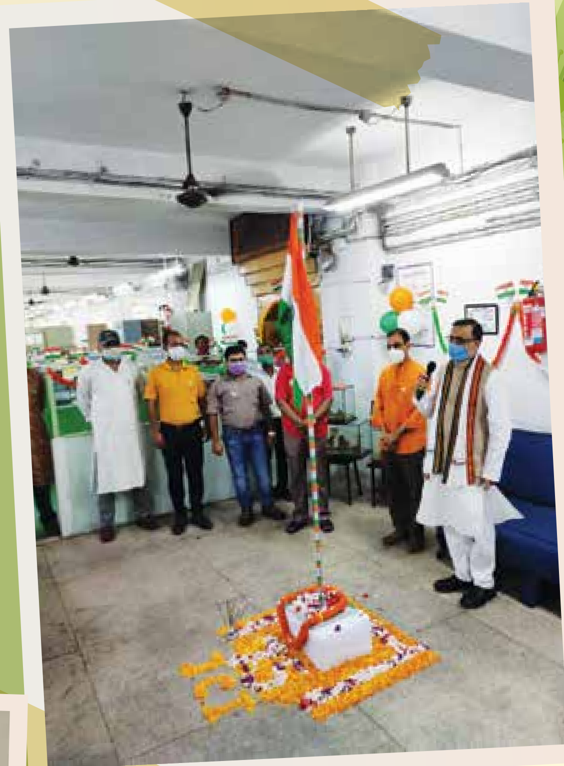

15 अगस्त 2021 को प्रधान कार्यालय में राष्ट्रीय ध्वज उत्तोलन करते हुए श्री अजय कुमार जॉली, प्रबंध निदेशक, श्री अमिताभ सिन्हा, निदेशक (वित्त) एवं अधिकारीगण।

30 अगस्त 2021 को श्री यू.पी. सिंह, सचिव, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार का स्वागत करते हुए श्री अजय कुमार जॉली, प्रबंध निदेशक।

गृह हिंदी पत्रिका 'पटसन ज्योति' के 5वें संस्करण का लोकार्पण करते हुए श्री अजय कुमार जॉली, प्रबंध निदेशक, श्री कल्याण कुमार मजुमदार, महाप्रबंधक (परि./विप.) एवं श्री अभिजीत चक्रवर्ती, उप महाप्रबंधक (का. व प्रशा.)।

संरक्षक

श्री अजय कुमार जॉली

प्रबंध निदेशक

एवं

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भापनि, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मार्ग-दर्शक

श्री अमिताभ सिन्हा

निदेशक (वित्त)

मुख्य संपादक

श्री रमेश कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) व विभागाध्यक्ष (रा.भा.)

संपादक मंडल

श्री कल्याण कुमार मजुमदार, *महाप्रबंधक (परि./विप.)*

श्री शान्तनू चक्रवर्ती, *मुख्य प्रबंधक (वित्त)*

श्री अभिक साहा, *कंपनी सचिव*

श्रीमती संदीपा सेन दत्ता, *वरिष्ठ प्रबंधक(मानव संसाधन)*

श्री जे. पी. के. मंडल, *वरि. अनु. (हिंदी)*

पत्राचार का पता

मुख्य संपादक

पटसन ज्योति, हिंदी विभाग

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

15एन, नेली सेनगुप्ता सरणी, कोलकाता-700 087

(प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों/संकलनकर्ताओं के हैं एवं इसके लिए संपादक मंडल जिम्मेवार नहीं है)

पटसन ज्योति

(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

विषय सूची

1.	संदेश	02
2.	प्रसन्नता का राज	05
3.	हमारा देश और हमारा कर्तव्य	05
4.	सद्भावना	06
5.	सावन मास और कांवड़ यात्रा	07
6.	इंटरनेट का महत्व	08
7.	कल की कल सोचेंगे`	09
8.	शायरी और हीरा	10
9.	उत्तर पूर्व भारत	11
10.	रिटायर्ड शिक्षक	12
11.	मां	13
12.	बेटियां	13
13.	हिंदी भाषा	14
14.	भारतीय किसान	14
15.	एक–एक	14
16.	किसान से जुड़ा हिंदुस्तान	15
17.	गुणों का खान जूट	15
18.	गुढ़ संदेश	16
19.	सपने बुनना सीख लो	16

संदेश

हमारा देश विभिन्न भाषाओं और बोलियों का देश है। हमारे संविधान द्वारा इन सभी भाषाओं एवं बोलियों को समुचित मर्यादा प्रदान की गई है। इन भारतीय भाषाओं में हिंदी एक ऐसी भाषा है जो विभिन्न भाषा-भाषियों के विचारों का अदान-प्रदान करने में सेतू का कार्य करती है।

आज के समय राजभाषा हिंदी की प्रगति दैनंदिन बढ़ती जा रही है। निगम के प्रधान कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें होती हैं और हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय कार्यालयों का समय-समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण होने से वहां कार्यरत कर्मचारियों को राजभाषा नियम, अधिनियम, निदेशों आदि की जानकारी मिलती रही है जिससे वे अपने कार्यों में आसानी से राजभाषा का प्रयोग कर रहे हैं। हमारे प्रधान कार्यालय में हिंदी में बातचीत का प्रचलन काफी प्रशंसनीय रहा है।

निगम के कर्मचारियों द्वारा हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेने से उनकी लेखन शैली में निखार आता है एवं नए-नए शब्दों का विस्तार होता है। इस क्रम में निगम की गृह हिंदी पत्रिका का प्रकाशन होना निश्चित रूप से प्रशंसनीय है। इससे निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच लिखने की प्रतिस्पर्धा बढ़ती है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा के कार्यान्वयन में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा और यह अन्य कार्मिकों को भी हिंदी लेखन के लिए प्रेरित करेगा।

मैं उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अपने दैनिक कार्य करने के साथ-साथ इस पत्रिका में हिंदी लेख देने की रूचि दिखाई है।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

अजय कुमार जॉली

(अजय कुमार जॉली)
प्रबंध निदेशक

संदेश

यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि निगम द्वारा नियमित रूप से हिंदी पत्रिका 'पटसन ज्योति' का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी देश की संस्कृति की पहचान उस देश में रहने वाले मनुष्य, समाज के रहन-सहन, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रभाषा, राजभाषा आदि से होती है। भारत देश की सभी भाषाएं अपने-अपने क्षेत्र में विशेष स्थान रखती हैं और राजभाषा हिंदी उस धागे की तरह है जो सभी भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में बांध कर रखती है।

आज भारतीय कंपनियों के साथ-साथ बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं प्रसारण माध्यमों ने हिंदी की लोकप्रियता तथा महत्व को स्वीकार किया है। इन्होंने अपने व्यावसायिक कार्य-कलापों में राजभाषा को अपनाया है ताकि वे जन-जन तक पहुंच कर अपने उत्पादों का बिक्री कर सके।

संविधान में राजभाषा का दर्जा पानेवाली हिंदी के प्रति हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम इसके प्रचार-प्रसार में पूरा सहयोग करें। निगम राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए सतत् प्रयास करते आ रहा है। हम अपने कर्मचारियों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण दिलाते आ रहे हैं जिससे वे अपने कार्यों में बेझिझक राजभाषा का प्रयोग कर सके। कर्मचारियों द्वारा लिखे जा रहे पत्रों तथा टिप्पणियों में बढ़ोतरी करने के उद्देश्य से समय-समय पर हिंदी कार्यशालों, प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया जाता है। निगम में राजभाषा के प्रयोग को सरल तथा सहज बनाने के लिए हमने अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी का एक 'पाकेट शब्द-संग्रह' बनवाया है और उसे कर्मचारियों के बीच वितरित किया है।

पत्रिका में प्रकाशित लेख देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ढेरों धन्यवाद।

शुभकामनाएं सहित

अमिताभ सिन्हा

(अमिताभ सिन्हा)
निदेशक(वित्त)

संपादकीय

हमें इस निगम की गृह हिंदी पत्रिका 'पटसन ज्योति' के 6वें संस्करण प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। आज के इस वैज्ञानिक युग में तकनीकी क्षेत्र को अधिक अहमियत दिया गया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, सोशल नेटवर्किंग, मोबाइल, माइक्रोफोन, गुगल आदि ने पूरी दुनिया को एक क्लिक में सीमित कर दिया है। इसके माध्यम से हमें अपनी आवश्यकता की वस्तुओं अथवा सेवाओं की जानकारी कुछ ही क्षणों में मिल जाती है। इसके पीछे भाषा की सबसे बड़ी भूमिका होती है, चाहे वह बोलकर हो अथवा लिखित। ऐसे परिदृश्य में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में इजाफा हुआ है। हमारे निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा हिंदी का कार्य बखूबी कर रहे हैं और इसी क्रम में इस पत्रिका का 6वां संस्करण आपसबों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है।

हम उन सभी कार्मिकों का आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने अपने कार्यालयीन कार्यों के साथ-साथ इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान दिए हैं। आशा है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से हमारे कार्मिकगण अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा का प्रयोग करने के लिए उत्साहित होंगे।

अन्य कार्य-कलापों के अतिरिक्त इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार का प्रयास जारी रहेगा। यह पत्रिका हिंदी पाठकों को निरंतर ज्ञानवर्धक जानकारी उपलब्ध कराते रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

रमेश कुमार

(रमेश कुमार)
विभागाध्यक्ष(रा.भा.)

प्रसन्न रहने का उपाय

वैसे तो प्रसन्नता या खुशी एक मूलभूत आवश्यकता है जिसकी तलाश में हमारा जीवन व्यतीत होता है। यह एक सरल-सा प्रश्न नहीं है। तथापि कुछ सामान्य से प्रतीत होने वाले उपाय भी अक्सर कारगर होते हैं। मेरी दृष्टि में कर्महीन जीवन प्रसन्नता से परिपूर्ण न हो सकेगा। अपने कर्मों के साथ गहरा जुड़ाव या कर्मठता और कर्मशीलता के माध्यम से प्रसन्नता की स्थिति अर्जित हो सकती है।

जिन लोगों में कर्मशीलता की कमी है, वे अक्सर उदास और गुमसुम देखे जा सकते हैं। वास्तव में कर्मशीलता ही जीवन का आधार है। यदि कोई कल्पना करे कि आराम करने से खुशी मिलेगी तो यह मृग तृष्णा या मृग मारीचिका के समान होगा। आवश्यकता से अधिक विश्राम न तो चित्त के लिए उत्तम है और न ही सेहत के लिए, प्रसन्नता के लिए तो कदापि नहीं। उदाहरण के तौर पर जरा एक घुड़सवार की कल्पना कीजिए जो घोड़े को अपने नियंत्रण में कर अपनी इच्छा से एक दिशा या मंजिल की ओर जा रहा है। इसी प्रकार जीवन और व्यवसाय में अपने दायित्वों को समझकर गन्तव्य की तरफ जाते हुए व्यक्ति जोश व उत्साह महसूस करता है। यही प्रसन्नता है। अन्य सहकर्मी उसकी प्रशंसा करते हैं और उत्साह भी बढ़ाते हैं।

अब उस व्यक्ति की कल्पना कीजिए जो अपने व्यवसाय में रोटी-रोजी के लिए आ तो गया है लेकिन उत्साह से उसमें संलग्न होकर कार्य नहीं कर पा रहा है। ऐसे महानुभाव की तुलना ऐसे व्यक्ति से की जा सकती है जो घोड़े के पीछे एक रस्सी द्वारा घसीटा जा रहा हो। वह स्वयं को पूर्ण रूप से उत्साहित करके घोड़े की सवारी करने में अक्षम है क्योंकि न तो वह योग्यता हासिल करता है और न ही करना चाहता है। वह परिश्रम से बचना चाहता है। आसपास के सहकर्मी उससे परेशान होंगे और उसकी आलोचन भी करेंगे।

वह बेचारा घसीटे जाने का दर्द सहन कर रहा है। कोई उससे कहे कि कम-से-कम वह रस्सी छोड़ दे। लेकिन उससे वह रस्सी छोड़ते भी नहीं बनता है। जाना है तो घोड़े के साथ ही, तो छोड़ेंगे नहीं! बिल्कुल नहीं।

एक परिपक्व व्यक्ति की पहचान है कि वह कर्मठता से अपने दायित्वों को समझे और उसका निर्वहन करने के लिए योग्यताएं व ज्ञान अर्जित करे और नियमों को समझ कर अपना कार्य सजगता व खुशी से करे। इसी में गहरी प्रसन्नता एवं स्वास्थ्य का राज छिपा है।

जय हिन्द

अजय कुमार जॉली
प्रबंध निदेशक
प्र.का., कोलकाता

हमारा देश और हमारा कर्तव्य

भारत एक महान देश है। हम भारतीय हैं और भारतीय के रूप में गर्व महसूस करते हैं। हमारा देश विविधता वाला देश है। यहां हिंदू, मुस्लिम, सिख, फारसी, जैन, ईसाई, बौद्ध सभी रहते हैं। अनेकता में एकता है। यहां एक सुंदर समाज है। परंतु आज हमारा सुंदर समाज कई तरह से क्षतिग्रस्त, पीड़ित और रोगाग्रस्त है। हमें इस खुबसूरत समाज की रक्षा करनी चाहिए। हमें अपने देश को और विकसित करने की

जरुरत है। जिस तरह एक मां अपने बच्चे को हर तरफ से रक्षा करती है, उसी तरह हमें अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी चाहिए। यह आर्थिक दृष्टि से हो सकता है, यह प्रदूषण मुक्ति से हो सकता है। जूट निगम के एक सामान्य कर्मचारी और देश के नागरिक के रूप में मैं अपने देश को प्लास्टिक के प्रदूषण से मुक्त कराना चाहता हूं। मैं खुद प्लास्टिक का इस्तेमाल करना बंद कर दूंगा और दूसरों को भी इसके इस्तेमाल नहीं करने की सलाह दूंगा। मैं इसका उपयोग करने से होने वाली बुराइयों के बारे में प्रचार करुंगा। वहीं सरकार को भी एक बड़ी भूमिका निभाने की जरुरत है। इस संदर्भ में मैं एक बात कहना चाहता हूं, केन्या एक छोटा-सा देश है। केन्या में प्लास्टिक बैगों के उत्पादन, बिक्री और उपयोग करने पर चार साल तक का कैद या 40000 डालर का जुर्माना लगाया जाता है। यह दुनिया का सबसे कठोर कानून है। इसका लक्ष्य प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण को कम करना है। दुनिया के 40 से अधिक देशों में प्लास्टिक के उपयोग पर आंशिक या पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसलिए हमें भी इसे अपने देश में पूरी तरह से बंद कर देना चाहिए और विकल्प के तौर पर जूट के उत्पादों का इस्तेमाल करना चाहिए। ऐसा करने से हमारा पर्यावरण स्वच्छ रहेगा। फिर से एक नया प्रदूषण मुक्त समाज बनेगा और अगर इस पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया जाता है तो यह प्रतिबंध पूरे देश के हित में होगा।

अंत में, मैं कविता की निम्नलिखित पंक्तिों के साथ अपना कथन समाप्त करता हूं:

प्लास्टिक बैग को ना कहें
भविष्य को हां कहें
प्लास्टिक को ना कहें
स्वास्थ के खतरे को कम करें,
जूट बैग का उपयोग करें
भविष्य को उज्जवल करें
किसानों की रक्षा करें
वातावरण को प्रदूषण मुक्त करें।

सेख तोसिक अली
कनिष्ठ निरीक्षक
त्रिमोहिनी डीपीसी, पश्चिम बंगाल

सद्भावना

शांति और सद्भाव किसी भी समाज का निर्माण खंड है। देश में विकास और उन्नति के लिए नागरिकों के बीच में राजनीतिक और सामाजिक समानता सुनिश्चित करना आवश्यक है। देश का संविधान व कानून शांति और सद्भाव बनाए रखने में सहयोग करते हैं। असामाजिक तत्वों द्वारा धार्मिक मदभेद देश में सद्भाव के विघटन के प्रमुख कारणों में से एक है। दंगे, आंदोलन, आतंक देश के प्रगति के लिए घातक हैं और समाज के सामान्य कामकाज को बाधित करते हैं। प्रतिवर्ष सद्भावना दिवस 20 अगस्त को मनाया जाता है जो कि पूर्व प्रधानमंत्री राजीव

गांधी का जन्म दिवस है। उनके शब्द आज भी हमें प्रेरित करते हैं। भारत एक प्राचीन देश है जो एक नए युग की ओर अग्रसर है। जैसे युवा अपने जीवन में नया कार्य करने के लिए बैचेन रहते हैं वैसे ही हमारा देश तेजी से विकास चाहता है। मैं एक युवा हूं और मेरा भी एक सपना है। मैं चाहता हूं कि भारत आत्मनिर्भर बने, उसे किसी पर निर्भर ना होना पड़े। वह एक शक्तिशाली एवं आत्मनिर्भर राष्ट्र बन कर दुनिया के सामने आए।

मानवता में भारत देश सबसे आगे रहा है। अकेले भारत सरकार समाज में भाईचारे और सौहार्द की भावना को सुनिश्चित नहीं कर सकती है। देश में शांति और सद्भाव बनाए रखना तभी मुमकिन है जब हम में से प्रत्येक नागरिक इसकी आवश्यकतानुसार संवेदनशील बनेंगे और उसके प्रति योगदान देंगे।

भारत की भूमि में जन्मे महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर और गुरु नानक देव ने जग को शांति का संदेश दिया था और अभी उनके द्वारा दर्शाए गए मार्ग पर चलने का समय आ गया है।

प्रियंका महंती
प्रबंधक (वित्त)
प्र. का., कोलकाता

सावन मास और कांवड यात्रा

सावन का महीना हिंदू आस्था से जुड़ा एक पवित्र महीना है। शुद्ध रूप से इसे 'श्रावण का महीना' कहते हैं। यह महीना किसानों के लिए भी खास महत्व रखता है। इस महीने में अधिक वर्षा होती है जिससे किसानों को फसल लगाने से लाभ मिलता है। सावन मास का संबंध मुख्य रूप से हिंदू धर्म से जुड़ा हुआ है। यह महीना ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भक्ति को उजागर करता है। सावन मास में विशेषकर भगवान शिव जी का पूजा किया जाता है। इसी महीने में हिंदुओं का पवित्र कांवड़ यात्रा शुरु होता है। इसलिए सावन का महीना कांवड़ यात्रा के साथ और भी पवित्र हो जाता है। हिंदू धर्म में भगवान शिव को सर्वोपरि माना गया है। शिव जी अनेक नाम से जाने जाते हैं जैसे महादेव, शंकर, भोलेनाथ, नीलकंठ, शंभू आदि। कांवड़ यात्रा में भक्त दूर–दूर से चलकर आते हैं और गंगा जी से जल भरकर भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए उनका

जलाभिषेक करते हैं। कांवड़ यात्रा में भक्त भगवा वस्त्र पहन कर ''बोल बम'' के नारे के साथ यात्रा करते हैं। भारत में कांवड़ यात्रा का प्रथा बहुत पहले से चली आ रही है। पौराणिक कथा के अनुसार कहा जाता है कि भगवान परशुराम ने ही सर्वप्रथम कांवड़ से भगवान शिव जी के शिवलिंग पर जल चढ़ाया था। प्रत्येक वर्ष सावन के महीने में कांवड़ यात्राओं में बड़ी संख्या में भक्त भगवान शिव जी को जल चढ़ाने के लिए निकलते हैं। इससे भगवान शिव जी भक्तों पर प्रसन्न होते हैं। भक्तों को सुख–समृद्धि देते हैं और उनकी मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

तरूण देव राय
अति. कनिष्ठ निरीक्षक
फारबिसगंज आरएलडी, बिहार

इंटरनेट का महत्व

इंटरनेट एक ऐसा शब्द है जिससे हर कोई वाकिफ है। सब कुछ जैसे इंटरनेट से ही होना है। इंटरनेट की सहायता से विकास की गति कई गुना बढ़ गयी है। दुनिया कागज मुक्त होने की ओर बढ़ चला है। दुनिया भर की जानकारी हर किसी के जेब में है। गांव-गांव लगभग हर कोई इंटरनेट का उपयोग अपने मोबाइल से कर रहा है। सूई से लेकर जहाज तक की विस्तृत जानकारी इंटरनेट के माध्यम से पा सकते हैं। किसने क्या कहा, कहां क्या हुआ, हर कुछ एक छोटे से मोबाइल में इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध है।

इंटरनेट एक विश्वव्यापी सूचना तंत्र है। इसका आविष्कार सन् 1969 में डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस द्वारा किया गया था। तब से इसमें लगातार सुधार किये गए हैं।

इस कोरोना जैसे संकट की घड़ी में इंटरनेट का बड़ा योगदान रहा है। इससे देश दुनिया में हो रहे क्रिया-कलापों की जानकारी आसानी से प्राप्त हो पाया है। घर से काम करना हो, घर बैठे सभा करनी हो, शिक्षा देनी हो या प्राप्त करनी हो, सब कुछ ऑनलाइन हो पाया है। इस कोरोना काल में लोग अपने जीविकापार्जन हेतु तरह–तरह के कामों को इजाद किये हैं। इसमें सबसे खास और दिलचस्प है यूट्यूब जैसे ऐप पर वीडियो बनाकर डालना जिसे दुनिया भर के लोग देख पा रहे हैं एवं प्रोत्साहित कर रहे हैं। इंटरनेट ने इस कोरोना काल में दुनिया को जीने के नये तरीके दिये हैं। यह इंटरनेट का ही कमाल है कि ई-कॉमर्स, डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल बीमा, डिजिटल यातायात (बुकिंग), डिजिटल खेल, डिजिटल शेयर बाजार, ऑनलाइन सिनेमा, डिजिटल खरीददारी, नौकरी के लिए ऑनलाइन आवेदन, ऑनलाइन बिडिंग, ऑनलाइन घर की खोज, डिजिटल आरोग्य और कितना कुछ एक ऐप के माध्यम से बहुत कम खर्च और बहुत कम समय में संभव हो पाया है।

बायजू से बच्चों का पढ़ना, ऑनलाइन क्लास और ऑनलाइन परीक्षाएं होना, शादी डॉट कॉम पर अपना जीवन-साथी खोजना, पूजा के लिए क्लिक फॉर पंडित, कार्स 24 पर कार बेचना, जीवन को कितना आसान बना दिया है। बस एक स्मार्ट फोन हो और/या एक लेपटाप हो। कुछ भी अनजान नहीं रहा। गुगल चित्र के सहारे हम अनजान शहर के लिए भी निकल पड़ते हैं।

अब तो लगता है दुनिया सचमुच अपनी मुट्ठी में है। आने वाले समय में संभव है कि हम ठोस मुद्रा देख ही न पाए। देश बदल रहा है, दुनिया बदल रही है। हमें भी बदलना होगा। यह इंटरनेट और टेलीकॉम का मिश्रण औद्योगिक और सामाजिक क्रांति ला दिया है। ऐसा लगता

है किसी काम के लिए बाहर जाने की जरूरत ही नहीं। सिर्फ घुमने के लिए बाहर निकलो और बस घुमते रहो। काम तो रास्ते चलते हो जायेगा या फिर घर से। मैं तो इंटरनेट का उपयोग बताते नहीं थकता।

जैसे हर चीज का कुछ लाभ है तो कुछ नुकसान भी है। वैसे ही इंटरनेट से कुछ नुकसान भी है। अगर गलत हाथों में पड़ जाये तो यही विनाशकरी भी साबित होती है। अपराध, आतंकवाद, अश्लीलता जैसी नकारात्मक चीजों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है जो समाज पर बुरा प्रभाव डालता है। कुछ बच्चे इसके इतने आदी हो जाते हैं कि कभी-कभी आत्महत्या, निराशा और धन की बर्बादी जैसे घटना को अनजाम दे डालते हैं।

हमें चाहिए कि इंटरनेट का सकारात्मक उपयोग करें और अपने जीवन को आसान और सुखमय बनाएं।

तारकेश्वर सिंह
उप प्रबंधक (वित्त)
प्र.का., कोलकाता

मैं यहां दो प्रेरणात्मक कहानियों का संकलन प्रस्तुत कर रहा हूं जिसका संदेश आज भी प्रासंगिक है। आशा है आप सब को यह पसंद आयेगा।

कल की कल सोचेंगे

सेठ जमनालाल बजाज ने संकल्प लिया था कि वे आजीवन स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करेंगे। उनकी प्रतिज्ञा यह भी थी कि वे प्रतिदिन किसी–न–किसी संत, महात्मा या विद्वान का सत्संग करेंगे।

एक दिन वे एक संत का सत्संग करने पहुंचे। बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, 'महाराज, आप जैसे संतों के आशीर्वाद से मैंने अपने जीवन में इतना धन अर्जित कर लिया हूं कि मेरी सात पीढ़ियों को कमाने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। आठवीं पीढ़ी की कभी–कभी मुझे चिंता होती है कि उसके भाग्य में पता नहीं क्या होगा?''

संतजी ने कहा, 'सेठजी, आठवीं पीढ़ी की चिंता आप न करें। कल सवेरे आप यहां आ जाए। आपकी सभी चिंताओं का समाधान हो जाएगा।'

सेठ जमनालाल बजाज सुबह–सुबह उनकी कुटिया पर जा पहुंचे। संत ने कहा, 'सेठजी, गांव के मंदिर के पास झाड़ू बनाने वाला एक गरीब परिवार झोंपड़पट्टी में रहता है। पहले आप उसे एक दिन के भोजन के लिए आटा-दाल दे आओ। उसके बाद मैं आपको वह युक्ति बताऊंगा।'

सेठ जमनालाल आटा–दाल लेकर उस झोंपड़ी पर पहुंचे। दरवाजे पर आवाज देते ही एक वृद्धा निकलकर बाहर आई। सेठजी ने उसे लाया हुआ खाद्यान्न थमाया तो वह बोली, 'बेटा, इसे वापस ले जा। आज का दाना पानी तो आ गया है।'

जमनालालजी ने कहा, 'तो कल के लिए इसे रख लो।' वृद्धा बोली, 'जब ईश्वर ने आज का इंतजाम कर दिया है तो कल का भी वह अवश्य करेगा। आप इसे किसी जरूरतमंद को दे देना।'

वृद्धा के शब्द सुनकर सेठ जमनालाल बजाज पानी–पानी हो गए। उन्होंने विरक्ति और त्याग की मूर्ति उस वृद्धा के चरण छूकर आशीर्वाद मांगा और वापस हो गए। इस घटना के बाद वे स्वयं कहा करते थे, 'कर्म करते रहो, ईश्वर की कृपा से आवश्यकताओं की पूर्ति स्वत: होती रहेगी।'

शायरी और हीरा

शेख सादी स्वाभिमानी और नेकदिल इंसान थे। जाने माने शायर होने के नाते बड़े–बड़े विद्वान उनके सत्संग के लिए लालायित रहा करते थे। भौतिक सुख–संपदा को वे आत्मिक आनंद में बाधा मानते थे, इसलिए उनका जीवन सरलता और सात्विकता से भरा हुआ था।

बादशाह शेख सादी की शायरी के दीवाने थे। एक दिन वे शेख सादी के निवास स्थान पर गए। वे अपने साथ एक बेशकीमती हीरा उपहार स्वरुप ले गए। उनकी सादगी देखकर सुल्तान के मुंह से निकल गया, 'आपकी तंगहाली देखकर मैं अपने आपको बहुत दुःखी महसूस करता हूं।'

आपको भेंट करने के लिए मैं अपने साथ यह नायाब हीरा लाया हूं। इसे बेचकर आप अपनी तंगहाली दूर कर सकते हैं।

बादशाह के इन शब्दों को सुनते ही शेख सादी ने कहा, 'सुल्तान, यह आपका भ्रम है कि हीरा किसी समस्या का समाधान कर सकता है। बल्कि सच्चाई यह है कि धन संपत्ति समाज में नई–नई समस्याएं ही पैदा करते हैं। इससे परिवार और समाज में दरार पैदा होती है। शायरी सुनकर लोग प्रेम की प्रेरणा लेते हैं, जबकि हीरा तो ईर्ष्या-द्वेष ही पैदा करता है।'

शेख सादी सुल्तान को लेकर एक शायरी समारोह में गए। उनकी शायरी सुनने के लिए वहां हजारों लोग मौजूद थे। देखते–ही–देखते उन्होंने सुल्तान द्वारा दिए गए हीरे को अचानक भीड़ के बीच उछाल दिया, फिर क्या था! वह हीरा पाने के लिए लोग एक–दूसरे पर झपटने लगे। उस धक्का–मुक्की में कई लोग घायल हो गए। यह देखकर सुल्तान समझ गए कि शायरी की तुलना हीरे से करना उनकी मूर्खता ही था।

अभिक साहा
कंपनी सचिव
प्र.का., कोलकाता

उत्तर पूर्व भारत

यहां पूर्वोत्तर के बारे में कुछ आश्चर्यजनक तथ्य दिए गए हैं।

1. पूर्वोत्तर में आठ राज्य हैं: अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, असम, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, सिक्किम, नागालेंड और ये देश के भौगोलिक क्षेत्र का 8% हिस्सा है।
2. पूर्वोत्तर में लगभग 220 भाषाएं बोली जाती हैं, यह तिब्बती, दक्षिण–पूर्व एशियाई और पूर्वी भारतीय सांस्कृतियों का मिश्रण है।
3. पूर्वोत्तर भारत का एकमात्र हिस्सा है जिसे मुगल साम्राज्य जीत नहीं सका।
4. अहोम राजवंश, जिसने 600 वर्षों तक पूर्वोत्तर पर शासन किया, भारतीय इतिहास में सबसे लंबा अखंड राजवंश है।
5. दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप माजुली और दुनिया का सबसे छोटा नदी द्वीप उमानंद दोनों पूर्वोत्तर में है।

6. भारत के सात प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान पूर्वोत्तर में स्थित हैं।
7. शिलॉग को भारत का रॉक कैपिटल माना जाता है।
8. मेघालय का मौसिनराम ने पृथ्वी पर सबसे गीला स्थान होने का गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड बनाया है।
9. असम में सुआलकुची दुनिया के सबसे बड़े बुनाई वाले गांवों में से एक है जहां पूरी आबादी रेशमी कपड़े की बुनाई में लगी हुई है।
10. असम का गोल्डन सिल्क मुगा दुनिया में और कहीं नहीं बनता है।
11. यह भारत का सबसे स्वच्छ क्षेत्र है। मेघालय का मावलिननांग पूरे एशिया का सबसे स्वच्छ गांव है।
12. देश के 70% आर्किड पूर्वोत्तर में पाए जाते हैं।
13. 2011 की जनगणना के अनंतिम आंकड़ों के अनुसार मिजोरम और त्रिपुरा भारत में उच्चतम साक्षरता दर वाले राज्यों में से हैं।
14. पूरे पूर्वोत्तर में दहेज प्रथा नहीं है।
15. सिक्किम दुनिया का पहला ऐसा राज्य है जहां की 100% कृषि उपज जैविक और प्रमाणित है।

एक बयान के अनुसार सिक्किम ने 25 देशों की 51 नामांकित नीतियों को पीछे छोड़कर 2018 का फ्यूचर पॉलिसी अवार्ड जीता। ब्राजील, डेनमार्क और क्विटो (इक्वाडोर) की नीतियों ने रजत पुरस्कार प्राप्त किए।

अनिक कुमार दे

आंचलिक प्रबंधक

गुवाहाटी आं. का., असम

रिटायर्ड शिक्षक

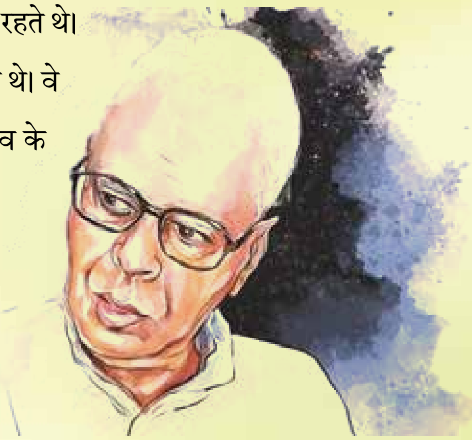

मोहनदास जो एक रिटायर्ड शिक्षक थे, अपने परिवार के साथ शहर से कुछ दूर गांव में रहते थे। उम्र के इस पड़ाव में भी वे अपने आप को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए अपना काम स्वयं करते थे। वे गांव में सभी बच्चों को शिक्षा एवं आदर्श की बातें सिखाते थे। उनके इस गुण के कारण गांव के सभी जन, बच्चे उनका बड़ा आदर सम्मान करते थे।

एक रात, मोहनदास को खबर मिली कि शहर में उनके किसी परिजन की तबीयत खराब है और उनका वहां पहुंचना अत्यंत आवश्यक है। फिर क्या था, मोहनदास ने उसी समय शहर जाने का निश्चय किया। रात का वक्त होने की वजह से बस, कार आदि उपलब्ध हो न सका। मोहनदास ने अपनी साइकिल उठाई और शहर का रूख किया।

ठंड का मौसम था और आधी रात का समय था। वे अपनी साइकिल पर ठंड में ठिठुरते हुए जा रहे थे। तभी अचानक साइकिल के आगे सड़क के एक ओर से आवाज आई, ''मेरी मदद करो, मेरी मदद करो. . . .कोई तो मेरी मदद करो. . .।'' मोहनदास ने एक आदमी देखा जो बीमार और असहाय दिख रहा था। सड़क किनारे बैठा रो रहा था। मोहनदास को देखते ही वह आदमी बोला, मेरी मदद कीजिए। मानवता के नाम पर कृपया मेरी मदद कीजिए। मोहनदास रुके। उसने फिर से बोला. . . . मैं बीमार हूं और भुखा–प्यासा भी हूं, मेरी मदद कीजिए। मोहनदास जो एक रहम दिल और परोपकारी इंसान थे, उन्होंने उस व्यक्ति की मदद करने का फैसला किया। वे जैसे ही अपने साइकिल पर टंगे बैग में से खाना और पानी निकालने लगे तभी वह व्यक्ति अचानक से चाकू लेकर उनके पीछे आ गया। मोहनदास संभलते कि इसके पहले उस व्यक्ति ने मोहनदास के सारे पैसे लुट लिये और वह चोर साइकिल लेकर भागने लगा तब मोहनदास ने प्यार से बोला कि तुमने बीमार और असहाय बनकर मुझे लूटा, यह बात किसी और को मत कहना। वरना लोगों का इंसानियत से विश्वास उठ जाएगा और लोग असहाय का सहायता करना छोड़ देंगे। उनका बात सुनकर चोर का आत्म-परिवर्तन हो गया और वह उनसे माफी मांगने लगा। उसने प्रण लिया कि भविष्य में कभी चोरी नहीं करेगा। उन्होंने मोहनदास के सारे पैसे लौटा दिया और अपने रास्ते चलने लगा।

मोहनदास के आदर्श की वजह से एक चोर का विचार और आत्मा परिवर्तित हो गया।

हृदिक नंदन नियोग
अति. कनिष्ठ निरीक्षक
धींग डीपीसी, असम

मां

घुटनों से रेंगते–रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छॉव में,
जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूं हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा–साधा, भोला–भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूं।
कितना भी हो जाऊं बड़ा,
''मां'' मैं आज भी तेरा बच्चा हूं।

नबजीत दास
अति. कनि. निरीक्षक
पातिलादाहा डीपीसी, असम

बेटियां

बेटी की प्यार को कभी आजमाना नहीं
वह फूल है, उसे कभी रूलाना नहीं
पिता का तो गुमान होती है बेटी
जिन्दा होने की पहचान होती है बेटी

उसकी आंखे कभी नम न होने देना
उसकी जिन्दगी से कभी खुशियां कम न होने देना
उंगली पकड़ कर कल जिसको चलाया था तुमने
फिर उसको ही डोली में बिठाया था तुमने

बहुत छोटा-सा सफ़र होता है बेटी के साथ
बहुत कम वक्त के लिए वह होती हमारे पास
असीम दुलार पाने की हकदार है बेटी
समझो भगवान का आशीर्वाद है बेटी

बी. एन. भंसाली
वरिष्ठ प्रबंधक (परि./विप.)
प्र. का., कोलकाता

हिंदी भाषा

सम्य देश था, सम्य वेश था,
सम्य हमारी भाषा थी।
बनी रहे अपनी सह पुजी,
हमें यही अभिलाषा थी।
कहां गई अपनी वह भाषा,
कहां हमारा वेश है?
भूल गये क्या भारतवासी,
बापू का यह देश है।
आज हमारी संस्कृति पर,
पश्चिम का रंग छाया है।
छोड़कर अपनी हिंदी भाषा,
अंग्रेजी को अपनाया है।
खान–पान व्यवहार सभी कुछ,
अपना नहीं पराया है।
चारों तरफ पश्चिमी सभ्यता ने,
अपना रंग जमाया है।
और तो और यह नेता भी अपने,
इसके ही गुलाम है।
भाषण तो अंग्रेजी में देते,
और कहलाते महान है।
फिर से जगाओ आत्म–गौरव,
जो भारत की शान है।
हिंदी अपनी राष्ट्र की भाषा,
यही अपनी पहचान है।

मो. मुमताज आलम
अति. कनिष्ठ निरीक्षक
प्रतापगंज डीपीसी, बिहार

भारतीय किसान

उम्मीदों से वो बीज है बोता
मिट्टी से फसल उगाता है,
पेट वो भरता हम सबका
अन्नदाता कहलाता है।
खेतों में बड़ी मेहनत करता
सोने-सी फसल उगाता है,
सर्दी, गर्मी हो या बरसात
हर मौसम से लड़ जाता है।

एक-एक

एक–एक यदि पेड़ लगाओ,
तो तुम बाग लगा दोगे।
एक–एक यदि ईंट जोड़ो,
तो तुम महल बना दोगे।
एक–एक यदि पैसा जोड़ो,
तो बन जाओगे धनवान।
एक–एक यदि अक्षर पढ़ लो,
तो बन जाओगे विद्वान।

पुरुषोत्तम हरि
सहायक प्रबंधक (परि./विप.)
बरहमपुर क्षे. का., पश्चिम बंगाल

किसान से जुड़ा हिंदुस्तान

पाट है किसान भाइयों का आधार,
पटसन निगम है किसान भाइयों का भरोसा,
हिंदी है हिंदुस्तान की पहचान,
वतन है हिन्दुस्ता हमारा।
कहता है किसान सुनो,
भाषा के रूप में हिंदी को ही चुनो।
उजाले में सोने जैसे चमकता है पाट,
हिंदी में ही बोला जाता है हिंदुस्तान की बात।
हिंदुस्तान है जज्बातों का देश,
हिंदी कहना है भारतीयों का उद्देश्य।
हम हैं हिंदुस्तानी यही है सबका नारा,
सब साथ मिल जाए तो बढ़ता है भाईचारा।
जैसे पाट देता है हिंदुस्तान को आशा,
वैसे ही पटसन निगम है किसान भाइयों का भरोसा।

विश्वजीत देवनाथ
अति. सहायक प्रबंधक (वित्त)
फारबिसगंज आरएलडी, बिहार

गुणों का खान जूट

आओ जूट लगाएं हम,
जीवन सुखी बनाएं हम।
धरती मां की यही पुकार,
जूट लगावें सालों साल।
फसल चक्र में जूट लगावें,
भूमी की उर्वरता बड़ावें।
आओ मिलकर जूट लगावें
धरती मां को हरित बनावें।
जूट धरती की शान है,
जीवन की मुस्कान है।
जे.आर.ओ. 204 बीज लगावें,
अपने खेतों की पैदावार बढ़ावें।
गोड़ाई में क्राइजाफ सोना छिड़कावें,
पाट रेशे को सोना-सा चमकावें।
क्राइजाफ सोना का गुण है महान,
रेशा चमकावे, मजबूती लावे और सड़न काल घटावे।
आओ मिलकर जूट लगावें,
पर्यावरण को स्वच्छ बनावें।

शंभू प्रसाद सिंह
डीपीसी (प्रबंधक)
दुर्गागंज डीपीसी, बिहार

गुढ संदेश

कुदरत का है आदी से, अपना अलग विधान
जिसको मानव तोड़कर, डाल रहा व्यवधान

मानवता के भाव से, विमुख हुआ इंसान
इसीलिए तो मिट रही, अब उसकी पहचान

जीवन रूपी नाव पर, नहीं संतुलित भार
कैसे कर सकते भला, जीवन अपना पार

संत सदा करते रहे, समय–समय आगाह
लेकिन मन पर स्वार्थ का, बढ़ता गया प्रवाह

सुख–सुविधा के मोह में, धर्म हो गया गौड़
तभी वृतियां आंतरिक, मचा रही घुड़–दौड़
क्षीण मनोबल हो गया, किसको करुँ गुहार
आज हमारी शाक्ति पर, प्रकृति कर रही वार

ईश्वर करता है कृपा, दशा हमारी देख
शास्त्रों में इसका किया, पृष्ठों में उल्लेख

मिल जाते हैं राह में, राहगीर को पीर
दिशा हमारी मोड़कर, सदा बंधाते धीर

किशोर कुमार
वरिष्ठ सहायक
फारबिसगंज आरएलडी, बिहार

सपने बुनना सीख लो

बैठ जाओ सपनों के नाव में, मौके का ना तलाश करो।
सपने बुनना सीख लो।
खुद ही थाम लो हाथों में पतवार, मांझी का न इंतजार करो।
सपने बुनना सीख लो।
पलट सकती है नाव की तकदीर, गोते खाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।
अब नदी के साथ बहना सीख लो, डुबना नहीं तैरना सीख लो
सपने बुनना सीख लो।
भंवर में फंसी सपनों की नाव, अब पतवार चलाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।
खुद ही राह बनाना सीख लो, अपने दम कुछ करना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।
तेज नहीं तो धीरे चलना सीख लो, भय के भ्रम से लड़ना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।

मजहर आलम
कंटिंजेंट
बहादुरगंज डीपीसी, बिहार

हिंदी दिवस के सुअवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए श्री अजय कुमार जॉली, प्रबंध निदेशक, श्री कल्याण कुमार मजुमदार, महाप्रबंधक (परि./विप.), श्री अभिजीत चक्रवर्ती, उप महाप्रबंधक (का. व प्रशा.) एवं श्री रमेश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) व राजभाषा अधिकारी।

12 अक्टूबर 2020 को वार्षिक लेखा, 2019-20 पर हस्ताक्षर करने के दौरान उपस्थित उच्च पदस्थ अधिकारीगण एवं सांविधिक लेखापरीक्षक।

09 अगस्त 2021 को फुलिया, शांतिपुर, पश्चिम बंगाल में हैंडलूम क्लसटर में हैंडलूम सप्ताह का अनुपालन करते हुए अधिकारीगण एवं उनके परिवार के सदस्यगण।

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

(भारत सरकार की संस्था)

15एन, नेली सेनगुप्ता सरणी, कोलकाता - 700 087

Printed by SKG Media, Kolkata 700017
Phone : 033 4063 3318